Postal Reg. No. : XXXXXXXXX

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ   نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ   وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 1 | अंक 27

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

मूल्य 300 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

8 सितम्बर 2016 ई   5 ज़िल्हज्ज 1437 हिजरी कमरी

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़ज़ल नाज़िल करे। आमीन

मुझे सारी दुनिया के सुधार के लिए एक सेवा सौंपी गई है। इसलिए कि हमारा आक़ा मख़दूम (जिस की सेवा की जाए।) सारी दुनिया के लिए आया था तो इस महान सेवा के लिए मुझ में वह शक्तियां और ताकतें दी गई हैं जो इस बोझ के उठाने के लिए आवश्यक थीं और वह मआरिफ़ और निशान भी दिए गए हैं जिन का दिया जाना दलील के पूरा होने के लिए उपयुक्त समय था।

उपदेश हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

याद रहे कि जब कि मुझे सारी दुनिया के सुधार के लिए एक सेवा सौंपी गई है। इसलिए कि हमारा आक़ा मख़दूम (जिस की सेवा की जाए।) सारी दुनिया के लिए आया था तो इस महान सेवा के लिए मुझ में वह शक्तियां और ताकतें दी गई हैं जो इस बोझ के उठाने के लिए आवश्यक थीं और वह मआरिफ़ और निशान भी दिए गए हैं जिन का दिया जाना दलील के पूरा होने के लिए उपयुक्त समय था। मगर ज़रूरी नहीं था कि हज़रत ईसा को वह मआरिफ़ और निशान दिए जाते।* क्योंकि उस समय उनकी जरूरत नहीं थी इसलिए हज़रत ईसा की प्रकृति को सिर्फ वे शक्तियां और ताकतें दी गईं जो यहूदियों के एक थोड़े से संप्रदाय के सुधार के लिए आवश्यक थीं और हम कुरआन शरीफ के वारिस हैं जिस की शिक्षा सभी कमालों का सार है और दुनिया के लिए है। मगर हज़रत ईसा केवल तौरात के वारिस थे जिसकी शिक्षा घटिया और विशेष क़ौम के लिए है इसलिए इंजील में उन्हें वे बातें ताकीद के साथ वर्णन करनी पड़ी जो शरीयत में छिपी और पर्दे में थीं लेकिन कुरआन शरीफ से हम कोई बात अधिक वर्णन नहीं कर सकते क्योंकि उसकी शिक्षा उत्तम और सम्पूर्ण है और वह तौरात की तरह किसी इंजील की मोहताज नहीं।

फिर जिस स्थिति में यह बात स्पष्ट है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को उतनी ही आध्यात्मिक शक्तियां और ताकतें दी गई थीं जो यहूदी संप्रदाय के सुधार के लिए काफी थीं तो निश्चय रूप से उनके कमाल भी उसी पैमाने के आधार पर होंगे जैसा कि अल्लाह तआला फरमाता है।

وَاِنۡ مِّنۡ شَیۡءٍ اِلَّا عِنۡدَنَا خَزَآئِنُہٗ وَمَا نُنَزِّلُہٗۤ اِلَّا بِقَدَرٍ مَّعۡلُوۡمٍ

प्रत्येक चीज़ के हमारे पास ख़जाने हैं मगर हम आवश्यकता से अत्यधिक उन्हें अवतरित नहीं करते है। इसलिए यह अल्लाह तआला के ज्ञान के विपरीत है कि एक उम्मती नबी को सुधार के लिए वे ज्ञान दिया जाए जिन ज्ञान से वह उम्मत तुलना ही नहीं रखती बल्कि पशुओं में भी ख़ुदा तआला का यही प्रकृति का कानून पाया जाता है। जैसे घोड़े को इस उद्देश्य के लिए ख़ुदा ने बनाया है कि सफर में अच्छा काम करे और प्रत्येक क्षेत्र में दौड़ने से अपने सवार का समर्थक और सहायक हो इसलिए एक बकरी इन विशेषताओं में उसका मुकाबला नहीं कर सकती क्योंकि वह इस उद्देश्य के लिए पैदा नहीं की गई। ऐसा ही ख़ुदा ने पानी को प्यास बुझाने के लिए बनाया है, इसलिए आग उसका प्रतिनिधि नहीं हो सकती। मानवीय प्रकृति कई शाखाओं पर आधारित है और कई विभिन्न शक्तियां ख़ुदा तआला ने उस में रखी हैं। लेकिन इंजील ने सिर्फ एक ही शक्ति अफ़ो (क्षमा) और माफी पर ज़ोर दिया है मानो मानवीय पेड़ के सैंकड़ों शाखाओं में से केवल एक शाखा इंजील के हाथ में है। तो इससे हज़रत ईसा की मअरफत की सच्चाई मालूम होती है कि वह कहाँ तक है लेकिन हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मअरफत मानवीय प्रकृति के छोर तक पहुंची हुई है इसलिए कुरआन शरीफ पूर्ण अवतरित हुआ। और यह कुछ बुरा मानने की बात नहीं अल्लाह तआला ख़ुद फरमाता है कि

فَضَّلۡنَا بَعۡضَھُمۡ عَلٰی بَعۡضٍ

कुछ नबियों को हम ने कुछ पर प्राथमिकता दी है। और हमें आदेश है कि सभी आदेशों में नैतिकता में इबादत में आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का पालन करें अगर हमारी प्रकृति को वे शक्तियां नहीं दी जातीं जो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सारे कमालों को प्रतीकात्मक रूप में प्राप्त कर सकतीं तो यह आदेश हमें हरगिज़ न होता कि नबी का पालन करो क्योंकि ख़ुदा तआला सामर्थय से बढ़ कर कोई तकलीफ नहीं देता जैसा कि वह ख़ुद फरमाता है

لَا یُکَلِّفُ اللّٰہُ نَفۡسًا اِلَّا وُسۡعَھَا

चूंकि वह जानता था कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सारे नबियों के कमालों के सार हैं इसलिए हमारी पांच समय की नमाज़ में हमें यह दुआ पढ़ने का आदेश दिया कि

اِھۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۙ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡھِمۡ

हे हमारे ख़ुदा हम से पहले जितने रसूल और सिद्दीक और शहीद गुज़र चुके हैं उन सब के कमाल हम में जमा कर। इसलिए इस उम्मत की उच्च प्रकृति का इस से अंदाज़ा लगा सकते है कि यह आदेश दिया है कि सभी पिछले विविध कमालों को अपने अंदर जमा करो। यह तो आम तौर पर आदेश है और गुण के विशेष स्तर इसी से मालूम हो सकते हैं। इसी कारण से इस उम्मत के कमाल वाले सूफी इस छिपे तथ्य तक पहुँच गए हैं कि मानवीय प्रकृति के कमाल की पूर्णता का दायरा इसी उम्मत ने पूरा किया है। बात यह है कि जिस तरह एक छोटा सा बीज ज़मीन में बोया जाता है और धीरे धीरे वह अपने कमाल को पहुंच कर एक बड़ा पेड़ बन जाता है। इसी तरह मानव श्रृंखला पल्लवित होता गया और मानवीय शक्तियां अपने कमाल में बढ़ती गईं यहाँ तक कि हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के समय में वह अपने कमाल तक पहुंच गईं।

* अगर कोई कहे कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम मुर्दे जीवित करते थे कितना बड़ा निशान उन्हें दिया गया। उसका यह जवाब है कि वास्तविक रूप में मुर्दे जीवित होना पवित्र कुरआन शरीफ की शिक्षा के विपरीत है हाँ जो मृत के रूप में बीमार थे तो उन्हें जीवित किया तो इस जगह भी ऐसे मुर्दे जीवित हो चुके हैं और पहले नबी भी करते रहे हैं जैसे इल्यास नबी। मगर भव्य निशान और हैं जिन्हें ख़ुदा दिखला रहा है और दिखलाएगा। इसी में से।

(हकीकतुल वह्यी, रूहानी खज़ायन,भाग 22, पृष्ठ 155 -157)

☆ ☆ ☆

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सम्पादकीय

हज और उस का महत्तव

इस्लाम की बुनियाद जिन पांच बातों पर रखी गई है उन में से एक हज है। एक सच्चे मुसलमान के लिए हज हज़ारों बरकतों का कारण बनता है। अल्लाह तआला क़ुर्आन करीम में कहता है। وَ اَذِّنۡ فِی النَّاسِ بِالۡحَجِّ یَاۡتُوۡکَ رِجَالًا وَّ عَلٰی کُلِّ ضَامِرٍ یَّاۡتِیۡنَ مِنۡ کُلِّ فَجٍّ عَمِیۡقٍ "और लोगों में हज्ज की घोषणा कर दे। वे तेरे पास पैदल चल कर आएँगे और प्रत्येक ऐसी सवारी पर भी जो लम्बी यात्रा की थकान से दुबली हो गई हो। वे सवारियां और चीज़े प्रत्येक गहरे और दूर के मार्ग से आएंगी।" (सूरत हज्ज आयत :28)

हज की बरकतों के विषय में अल्लाह तआला क़ुर्आन करीम में फ़र्माता है कि "सब से पहला घर जो लोगों के लाभ के लिए बनाया गया था वह है जो मक्का में है। वह सारे संसारों के लिए बरकत वाला स्थान तथा हिदायत का साधन है। उस में कई खुले निशान हैं वह इब्राहीम की खड़े होने (भक्ति) की जगह है। और जो उस में दाख़िल हो वह अमन में आ जाता है।" (आले इमरान : 97-98)

इस्लाम धर्म के संस्थापक हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुसलमानों को हज की अदायगी और इसकी बरकतों से परिचित कराते हुए कहा ''हे लोगो अल्लाह तआला ने तुम पर हज फ़र्ज़ किया है चाहिए कि तुम हज करो।

(मुस्लिम)

हज़रत अबू हुरैरा (र) वर्णन करते हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कहा "जिस ने हज किया और उस ने न बेहूदगी की, न बुराई की तो वह हज से इस प्रकार लौटेगा जैसे अभी उसकी मां ने उसे जन्म दिया है।"

(बुख़ारी व मुस्लिम)

हज क्या है ?

ध्यान रहे कि हज एक आशिकाना इबादत है एक सच्चा मुसलमान अपने पैदा करने वाले ख़ुदा से हज के द्वारा अपनी मुहब्बत तथा इश्क को प्रकट करता है। दुनिया में रोज़ ऐसी बहुत सी चीज़ें देखने में आती हैं कि लोग ऐसी चीज़ों से प्रेम करके बहुत से दुख और मुश्किलें उसके बदले में सहन करते हैं जिन की कोई वास्तविकता नहीं है और कभी कभी उसके बदले में अपनी जान की क़ुर्बानी भी देने को तैयार हो जाते हैं। हज में अल्लाह का बन्दा जितने भी अहकाम तथा ख़ुदा के हुक्म पूरे करता है वह सब ख़ुदा तआला की खुशी के लिए होता है ।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम कहते हैं :-

"इबादत के दो भाग हैं एक वह जो इन्सान अल्लाह से डरे ,जो डरने का हक है। दूसरा हिस्सा इबादत (भक्ति) का यह है कि इंसान ख़ुदा से प्रेम करे जो प्रेम करने का हक है। यह हक दो हैं जो अल्लाह अपने बारे में इंसान से मांगता है। इस्लाम ने इन दो हकों को पूरा करने के लिए एक मार्ग नमाज़ का रखा जिस में नमाज़ के ख़ौफ़ (डर) का पहलू रखा तथा प्रेम को ज़ाहिर करने के लिए हज रखा है। हज में मुहब्बत के सभी पहलू पाए जाते हैं। कभी कभी मुहब्बत अधिक हो जाने के समय कपड़े की भी ज़रूरत नहीं रहती, इश्क भी एक जनून होता है। कपड़ों को संवार कर रखना यह इश्क़ में से नहीं रहता। अर्थात् यह नमूना जो बहुत ही अधिक मुहब्बत के लिबास में होता है वह हज में मौजूद है। सिर मुंडवाया जाता है, दौड़ते हैं, मुहब्बत का चुम्बन रह गया वह भी है जो ख़ुदा की सारी शरीअतों में तसवीरी भाषा में चला आया है। फिर क़ुर्बानी में भी कमाल इश्क़ दिखाया है। इस्लाम ने पूरे तौर पर इन हुकूक को पूरा करने की शिक्षा दी है। वह व्यक्ति नादान है जो अन्धेपन से एतिराज़ करता है।"

(मलफ़ूज़ात भाग 3 पृ 299)

हज वह महत्त्वपूर्ण इबादत है जो इस्लाम का पांचवां स्तम्भ है, जिस के बिना किसी मानव का इस्लाम पूर्ण नहीं हो सकता जिस की फर्ज़ीयत के प्रति अल्लाह तआला ने पवित्र कुरआन में फरमाया है,

وَ لِلّٰہِ عَلَی النَّاسِ حِجُّ الۡبَیۡتِ مَنِ اسۡتَطَاعَ اِلَیۡہِ سَبِیۡلًا ؕ وَ مَنۡ کَفَرَ فَاِنَّ اللّٰہَ غَنِیٌّ عَنِ الۡعٰلَمِیۡنَ (सूरः आले-इमरान,98)

और अल्लाह का लोगों पर अधिकार है कि जो लोग अल्लाह के घर काबा जाने आने की क्षमता रखते हैं, तो वह हज के लिए काबा की यात्रा करें और जो इन्कार करेगा तो अल्लाह सारे संसार वालों से बेनयाज़ है।"

इसी तरह रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने फरमाया

"हे लोगो, अल्लाह तआला ने तुम्हारे ऊपर हज फर्ज़ (अनिवार्य) किया है, तो तुम लोग हज करो, तो एक आदमी ने कहा, हे अल्लाह के रसूल! क्या प्रत्येक वर्ष? तो अल्लाह के रसूल ख़ामोश हो गए फिर कुछ समय के बाद फरमया, यदि मैं "हाँ " कहता तो अनिवार्य हो जाता और तुम लोग इस की क्षमता नहीं रखते।

(सही मुस्लिम)

हज का फर्ज़ होना

किसी इन्सान पर हज के फर्ज़ होने के लिए उन में पांच शर्तो का पाया जाना ज़रूरी है

(1) मुस्लिम होना: हज उसी मानव पर अनिवार्य होता है जो मुस्लिमान होता है, और मुस्लिम होने के बाद हज करता है तो उस का यह हज उस के लिए काफी होगा यदि किसी ने इस्लाम स्वीकार करने से पहले हज किया तो इस्लाम स्वीकार करने के बाद उसे दोबारा हज करना पड़ेगा।

(2) **बुद्धि वाला होना:** अल्लाह तआला ने धर्म के आदेश को मानना बुद्धि वालों पर अनिवार्य किया है जो मानव पागल है, तो ऐसे व्यक्तियों पर धर्म की बातों का पालन करना अनिवार्य नहीं है। जैसा कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने फरमाया

आयशा (रज़ि अल्लाहो अन्हा) से वर्णन है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने फरमाया, " तीन व्यक्तियों को अल्लाह तआला ने क्षमा किया है। नींद से सोने वाले को यहां तक कि वह नींद से जाग जाए, और पागल को यहां तक कि वह बुद्धि वाला हो जाए और बच्चों से यहां तक कि वह बालिग़ (व्यस्क) हो जाए।

(सुनन अबी दाऊद)

(3) **बालिग होना:** अल्लाह तआला ने धर्म के आदेश को मानना बालिग पुरूषों तथा महिलओं पर अनिवार्य किया है, कोई भी बालक या बालिका धर्म के आदेश तथा आज्ञा पर अनुकरण कर सकता है परन्तु बालिग होने के बाद धर्म के आदेश पर अनुकरण करना अनिवार्य हो जाता है यदि बालिग होने के बाद धर्म की आज्ञा अनुसार जीवन नहीं बिताता तो वह पापी और गुनहगार होगा जैसा कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने स्पष्ट किया कि बच्चों पर धर्म की आज्ञा का पालन अनिवार्य नहीं है। जैसा कि उपरोक्त हदीस में वर्णन किया गया है।

(4) **आजाद होना:** इसी तरह गुलाम पर हज फर्ज़ नही है,

(5) **क्षमता होना:** किसी भी मुस्लिम की आर्थिक क्षमता के अनुसार उस पर हज फर्ज़ होता है जैसा अल्लाह तआला ने स्वयं ही कुरआन मजीद में फरमाया है।

وَ لِلّٰہِ عَلَی النَّاسِ حِجُّ الۡبَیۡتِ مَنِ اسۡتَطَاعَ اِلَیۡہِ سَبِیۡلًا ؕ وَ مَنۡ کَفَرَ فَاِنَّ اللّٰہَ غَنِیٌّ عَنِ الۡعٰلَمِیۡنَ

(सूरः आले-इमरान,98)

और अल्लाह का लोगों पर अधिकार है कि जो लोग अल्लाह के घर काबा जाने आने की क्षमता रखते हैं, तो वह हज के लिए काबा की यात्रा करें।

(सूरः आले-इमरान,97)

क्षमता का अर्थ यह कि मानव के पास आर्थिक क्षमता हो और साथ ही शारीरिक क्षमता भी हो यदि किसी के पास शारीरिक क्षमता है परन्तु आर्थिक क्षमता उप्लब्ध नहीं तो उस पर हज अनिवार्य नहीं और किसी के पास आर्थिक क्षमता उपलब्ध है परन्तु बुढ़ापे या अधिक बीमारी के कारण शारीरिक क्षमता नहीं तो अपनी ओर से किसी दुसरे मानव को जो अपनी ओर से हज कर चुका हो पूरा खर्च दे कर हज के लिए उसे भेजा जा सकता है या उस शारीरिक क्षमताहीन मानव की ओर से उस के रिश्तेदार जो अपनी ओर से हज कर चुके हैं, हज भी कर सकता है,

हज की क्षमता होने की स्थिति में हज करने के लिए जल्द जाना:

जो लोग हज की क्षमता रखते हैं और हज का इरादा भी रखते हैं तो ऐसे लोगों को हज करने की ओर जल्दी करना चाहिए, क्योंकि न जाने कब कौन सा नसीब उस के रास्ते में रोड़े अटका दे और हज जैसी महत्त्वपूर्ण इबादत से वंचित हो जाए। जैसा कि रसूल (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने लोगों को जल्दी हज करने पर उत्साहित करते हुए फरमाया।)

अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ी अल्लाह अन्हुमा) से वर्णन है कि रसूलुल्लाह

शेष पृष्ठ 7 पर

ख़ुत्बः जुमअः

यह अल्लाह तआला का बड़ा अनुग्रह और दया है कि उस ने हमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मेहमानों की सेवा की तौफ़ीक़ प्रदान फरमाई और अल्लाह तआला की कृपा से दुनिया के हर देश में ये लोग जमाअत का स्वभाव बन गया है कि जमाअत के हर वर्ग और हर उम्र के लोगों ने सालाना जलसा के मेहमानों की सेवा करनी है।

आज हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ग़ुलाम अल्लाह तआला के आदेश के अनुसार नि:स्वार्थ और बिना लाभ के और बिना थके और बिना माथे पर बल लाए उन मेहमानों की सेवा कर रहे हैं और यही हमारा कर्तव्य है कि इन मेहमानों की सेवा करें और जलसा की व्यवस्था को उत्तम रंग में करने की कोशिश करें।

नैतिकता से पेश आना मेहमान का अधिकार है और मेज़बान का कर्तव्य है।

अल्लाह तआला की कृपा से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के साथ अल्लाह तआला के वादे के अनुसार दुनिया में हर जगह जहां जमाअत मजबूत नींव पर कायम हैं लंगर चल रहे हैं और विशेष रूप से जलसा के दिनों में तो इसकी विशेष व्यवस्था है।

जब सेवा के लिए अपने आप को हम ने प्रस्तुत किया है तो बिना किसी अनुकूलित के प्रत्येक की सेवा करनी चाहिए। हर जलसा में आने वाला मेहमान जलसा का मेहमान है। प्रत्येक से अच्छा व्यवहार करना प्रत्येक से अच्छे स्वभाव से पेश आना ज़रूरी है।

साथ ही यह दुआ भी करते रहना चाहिए कि अल्लाह तआला हमारी इस छोटी सी सेवा को जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मेहमानों की कर रहे हैं इसे स्वीकार भी करे और हमारे काम सभी प्रकार के दिखावा से खाली हों और विशेष रूप से अल्लाह तआला के लिए हों ।

जलसा सालाना के अवसर पर मेहमानों की मेहमान नवाज़ी के स्तर को बहुत से बहुत उत्तम बनाने के लिए मेंज़बानों और जलसा सालाना के प्रशासन और कार सेवकों को अत्यधिक महत्तवपूर्ण उपदेश।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़,
दिनांक 5 अगस्त 2016 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन, यू.के.

أَشْـهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْـدَهٗ لَا شَـرِيكَ لَهٗ وَأَشْـهَدُ أَنَّ مُحَمَّـدًا عَبْـدُهٗ وَ رَسُـوْلُهٗ. أَمَّـا بَعْـدُ فَأَعُـوْذُ بِـاللّٰهِ مِـنَ الشَّـيْطٰنِ الرَّجِيْـمِ. بِسْـمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰـنِ الرَّحِيْـمِ - اَلْحَمْـدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ. اَلرَّحْمٰـنِ الرَّحِيْـمِ - مٰلِكِ يَـوْمِ الدِّيْـنِ - اِيَّـاكَ نَعْبُـدُ وَ اِيَّـاكَ نَسْتَعِيْنُ. اِهْدِنَـا الصِّـرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ. صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْـهِمْ - غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْـهِمْ وَلَا الضَّآلِّـيْنَ -

इंशा अल्लाह तआला अगले शुक्रवार से जमाअत अहमदिया ब्रिटेन का सालाना जलसा शुरू हो रहा है। अल्लाह तआला की कृपा से सालाना जलसा में शामिल होने के लिए दुनिया के विभिन्न देशों से मेहमानों का आना शुरू हो गया है। अल्लाह तआला जलसा सालाना के प्रशासन को जलसा में आने वाले मेहमानों की चाहे दुनिया के विभिन्न देशों से आने वाले हैं या ब्रिटेन के विभिन्न क्षेत्रों से आने वाले हैं, उत्तम रूप में सेवा की तौफ़ीक़ प्रदान करे।

अल्लाह तआला की कृपा से जलसा में आने वाले मेहमानों की सेवा के लिए सारे ब्रिटेन से बूढ़े, जवान, बच्चे, औरतें ख़ुद को स्वैच्छिक सेवा के लिए प्रस्तुत करते हैं और जैसे-जैसे शामिल होने वालों की संख्या बढ़ रही है। जलसा की व्यवस्था बढ़ रही है, सेवा करने वालों की भी आवश्यकता होती है और अल्लाह तआला की कृपा से बिना किसी कठिनाई के और ख़ुशी से बच्चे भी युवा भी औरतें भी पुरुष भी अपने आप को सेवा के लिए प्रस्तुत करते हैं और बहुमत युवाओं और बच्चों की भी यह सेवा कर के समझ रही है कि यह अल्लाह तआला का बड़ा अनुग्रह और दया है कि उस ने हमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मेहमानों की सेवा की तौफ़ीक़ प्रदान फरमाई और अल्लाह तआला की कृपा से दुनिया के हर देश में ये जमाअत के लोगों का स्वभाव बन गया है कि जमाअत के हर वर्ग और हर उम्र के लोगों ने सालाना जलसा के मेहमानों की सेवा करनी है।

पिछले सप्ताह शुक्रवार से रविवार तक जमाअत अहमदिया अमेरिका का जलसा था वहां पर भी उनके कार्यक्रम जो इंटरनेट पर आते थे, यूट्यूब पर थे, इस में मैंने एक साक्षात्कार देखा। साक्षात्कार लेने वाले ने ख़ुद्दामुल अहमदिया के अधिकारी से साक्षात्कार लिया। वे बता रहे थे कि किस तरह जलसा सालाना की तैयारी के लिए ख़ुद्दाम ने और स्वयं सेवकों ने काम किया। इसी तरह इस में एक उन्नीस बीस साल के लड़के का भी साक्षात्कार था। वहीं का बड़ा हुआ वहीं का पैदा हुआ। उस से सवाल पूछा गया कि यह सारा काम तुम ने किया है उस के बदले में तुम्हें क्या मिलता है? कितनी राशि मिलेगी? कितने डॉलर मिलेंगे? तो यह प्राय से सवाल किया गया। तो जैसा कि मैंने कहा कि अमेरिका में पला है और उस देश में दुनियादारी की सोच है तो उन्होंने यही जवाब दिया था कि हम तो स्वेच्छा से काम करते हैं जो मज़दूरी हमें मिलती है। दुनियादारों की सोच से वह ऊपर है हम तो ख़ुदा तआला की ख़ुशी पाने के लिए काम करते हैं। और यह वह स्वभाव है जो अल्लाह तआला की कृपा से दुनिया के हर देश में रहने वाले अहमदी का है। चाहे अफ़्रीकी या इंडोनेशियाई या द्वीप का रहने वाला है या पश्चिम के विकसित देशों का रहने वाला है। जब दुनिया की प्राथमिकताए स्कूलों कॉलेजों में छुट्टियों के दौरान खेल कूद और सैरें करनी हैं, जब सांसारिक नौकरी करने वालों की प्राथमिकताओं नौकरियों से छुट्टी मिलने पर आराम करना और परिवार के साथ छुट्टियां बिताना है उस समय एक अहमदी की प्राथमिकताएं अलग हैं। अगर इन छुट्टियों में सालाना जलसा आ रहा है तो इन दिनों में पढ़े लिखे भी और अनपढ़ भी अधिकारी भी और सहायक भी, पेशावर भी और साधारण मज़दूर भी, और छात्र भी अपने आप स्वेच्छा से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मेहमानों की सेवा के लिए प्रस्तुत करते हैं।

बाकी दुनिया के विकसित देशों में तो जलसे बड़े हॉल में या ऐसी जगह पर होते हैं जहां कई सुविधाएं मिलती हैं लेकिन ब्रिटेन का जलसा तो ऐसी जगह है जहां हर प्रबंधन अस्थायी करना है और हर संभव सुविधा जो कहीं भी उपलब्ध हो सकती है या जो भी दी जा सकती है उसे उपलब्ध भी करना है और फिर परिषद द्वारा यह शर्त भी है कि काम शुरू करने की तारीख़ से लेकर जलसा के बाद सब कुछ समेटने और इस जगह को पहली जैसी कृषि भूमि या फार्म भूमि भी बनाना है और यह सब काम अट्ठाईस दिनों के भीतर करना है तो इस मामले में एक सीमित समय में बहुत

बड़े बड़े काम को करने के लिए बहुत अधिक स्वयं सेवकों की आवश्यकता है। काम शुरू करने से ख़त्म करने का समय एक तरफ तो काम की प्रकृति के मामले में बहुत थोड़ा समय है लेकिन वालन्टीयरज़ काम करने के मामले में अट्ठाईस दिन बल्कि कुछ काम ऐसे हैं जो पहले भी शुरू हो जाते हैं जो सीधे जलसा स्थल में नहीं हो रहे होते लेकिन उनकी तैयारी के लिए भी दो तीन सप्ताह पहले स्वयं सेवक काम शुरू कर देते हैं। मानो यहां के कार्यकर्ता कुछ ऐसे भी हैं जो अपने समय और माल की कुरबानी लगभग डेढ़ दो महीने तक करते रहते हैं और यह समय एक व्यक्ति के काम करने के लिए स्वेच्छा से काम करने के लिए बहुत बड़ा समय है। तो इस दृष्टि से तो ब्रिटेन का जलसा स्वयं सेवकों को जलसा के काम के लिए कुरबानी और जलसा की ड्यूटी के महत्त्व का पता है। कई सालों से इस सेवा का संचालन कर रहे हैं लेकिन फिर भी ऐसे कई कार्यकर्ता होते हैं जो नए शामिल हो रहे हैं कुछ का जलसा के दिनों में सीधा मेहमानों के साथ संबंध पड़ता है उन में उनकी ड्यूटी होती। कुछ की जलसा के दिनों में शुरू होगी। कुछ की आज कल से शुरू हो चुकी है जबकि मेहमान आने शुरू हो गए जैसा कि मैंने कहा तो इन सब को अनुस्मारक के रूप में इस समय मैं कुछ कहूंगा।

कई बार कुछ लोगों को सेवा का जुनून तो बहुत ज़्यादा होता है लेकिन स्वभाव प्रत्येक का अपना है। कुछ कम हौसले का शिकार होते हैं। कुछ कम ज्ञान होने के कारण से कुछ ऐसी बातें कर रहे हैं या उनसे ऐसी बातें हो जाती हैं जो मेहमानों के लिए कष्ट का कारण बन सकती हैं और अनुस्मारक करवाने से स्वेच्छा से काम करने वाले कार्यकर्ता सावधान हो जाते हैं और अधिक ध्यान से अपने कर्तव्यों को अन्जाम देने की कोशिश करते हैं वरना मुझे तो इस बात में मामूली सी भी शंका नहीं है कि कार्यकर्ता सेवा भावना से समर्पित होकर सामान्य काम नहीं करते बेशक यह सब कार्यकर्ता सेवा की भावना से काम करने वाले हैं। याद करवाना और सावधान करना भी अल्लाह तआला का आदेश है इसलिए हर साल जलसा से एक शुक्रवार पहले ध्यान दिलाता हूं। कुरआन में भी अल्लाह तआला ने मेहमानों का उल्लेख इब्राहीम के मेहमानी का उल्लेख करके मेहमानी का महत्त्व बताया है और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी विभिन्न अवसरों पर मेहमान नवाज़ी के महत्त्व और विशेषता का वर्णन किया है। इस समय हमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भी इस ओर विशेष ध्यान दिलाया है बल्कि अपनी बेअसत के उद्देश्यों में से एक उद्देश्य धर्म के लिए सफर करके आने वाले मेहमानों की मेहमान नवाज़ी भी करार दिया है। अत: आप एक जगह लिखते हैं कि

"तीसरी शाखा इस कारखाने की आने वालों और सच्चाई की खोज के लिए सफर करने वाले और अन्य कारणों से आने वाले हैं।" फिर फरमाया कि "यह शाखा भी बराबर विकास कर रही है।"(फतह इस्लाम रूहानी ख़ज़ायन भाग 3 पृष्ठ 14) अर्थात बढ़ रही है। फिर आप ने यह भी फरमाया कि हज़ारों की संख्या में ये लोग आ रहे हैं। कादियान की छोटी सी बस्ती में जहां उस ज़माने में(उद्धरित फतह इस्लाम रूहानी ख़ज़ायन भाग 3 पृष्ठ 14) किसी प्रकार की सुविधा भी उपलब्ध नहीं थी मेहमानों की मेहमान नवाज़ी के लिए बटाला या अमृतसर से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम सामान मंगवाया करते थे। ऐसे समय में कई बार इंसान परेशान भी हो जाता है कि आने जाने के माध्यम भी नहीं हैं। कई बार पैदल जाना होता था। आमतौर तांगे पर जाते थे। ऐसे हालात में मेहमानी के लिए एक दूर दराज़ के इलाका में बहुत मुश्किल है। इसीलिए अल्लाह तआला ने आप के अपने दिल को मज़बूत करने के लिए पहले से ही फरमा दिया था। अरबी का इल्हाम है जिसका अनुवाद है कि लोग बहुत अधिक तेरी ओर लौटेंगे अत: तेरे पर वाजिब है कि तू उन से बुरा व्यवहार न करे और तुझे अवश्य है कि उनकी बहुतायत देखकर थक न जाए।

(उद्धरित लेक्चर लाहौर रूहानी ख़ज़ायन भाग 20 पृष्ठ 242)

आज दुनिया के कोने कोने में जलसों के आयोजन यह नज़ारे दिखाते हैं कि लोग बहुत आते हैं और आध्यात्मिक और शारीरिक खाना प्राप्त करते हैं और यहाँ ब्रिटेन में समय के ख़लीफा की उपस्थिति के कारण दुनिया के कोने कोने से मेहमान आते हैं और सिर्फ इसलिए कि धार्मिक ज्ञान प्राप्त करें और अपनी आध्यात्मिक प्यास बझाएँ।

आज हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ग़ुलाम अल्लाह तआला के आदेश के अनुसार नि:स्वार्थ और बिना लाभ के और बिना थके और बिना माथे पर बल लाए उन मेहमानों की सेवा कर रहे हैं और यही हमारा कर्तव्य है कि इन मेहमानों की सेवा करें और जलसा की व्यवस्था को उत्तम रंग में करने की कोशिश करें।

जलसे में ग़ैर अहमदी और ग़ैर मुस्लिम भी आते हैं और हमेशा काम करने वालों के काम से प्रभावित होते हैं और इस बात पर हैरान होते हैं कि कैसे छोटे बच्चे अपनी ज़िम्मेदारी निभा रहे हैं। अपने ज़िम्मे लगाई गई ड्यूटी को अंजाम दे रहे हैं और बड़ी ज़िम्मेदारी से अंजाम दे रहे हैं।

पिछले साल एक मेहमान युगांडा से आए हुए थे। वहां के मंत्री भी हैं। कहने लगे कि मेहमान नवाज़ी और व्यवस्था को देखकर हैरान हुआ कि कैसे लोग स्वेच्छा से इतनी कुरबानी कर रहे हैं। कहने लगे मेरी कल्पना में भी नहीं था कि मैं एक ऐसे समारोह में शामिल होने जा रहा हूँ जहाँ इंसान नहीं बल्कि फरिशते काम करते नज़र आएंगे। कहते हैं कि बीस बार भी कोई चीज़ मांगो तो हंसते हुए पेश करते थे। कई इस बात का इज़हार करते थे कि बच्चे खाने की ड्यूटी पर खिला रहे होते तो बेहद हंस मुख चेहरे के साथ। अगर जलसे की मार्की में पानी पिला रहे होते तो बेहद खिले हुए चेहरे के साथ। बार बार ज़रूरत पूछते, पानी का पूछते और यह केवल विशेष मेहमानों के लिए ही नहीं बल्कि हर मेहमान के लिए यह श्रमिकों का व्यवहार था और यही वह गुण है, सेवा की भावना की जो केवल जमाअत अहमदिया के हर कार्यकर्ता की विशेषता है और होनी चाहिए। इसलिए इस विशेष गुण को हर कार्यकर्ता ने हमेशा जीवित रखना है चाहे वह किसी भी क्षेत्र में काम कर रहा हो।

हमारे जलसे के मेहमान जब आते हैं तो उनका सम्बन्ध विभिन्न विभागों से पड़ता है। आते ही उन्हें स्वागत विभाग से सम्बन्ध पड़ता है। स्वागत विभाग आमतौर मेहमानों का बड़ी अच्छी तरह स्वागत करता है। मेहमान जब सफर करके आता है तो उसे थकान भी होती है। सफर में चाहे जितनी भी सुविधाएं उपलब्ध हों इस ज़माने में भी सफर की ऊब और थकान होती है। इसलिए स्वागत विभाग को इस बात को हमेशा अपने सामने रखना चाहिए।

एयरपोर्ट पर तो मेहमानों की स्वागत का विभाग काम कर रहा होता है और आमतौर पर अच्छा प्रबंध होता है लेकिन कुछ पड़ोसी देशों से जो सफर कर के मेहमान आते हैं कार से आते हैं या बस से। वह कई घंटे सफर करके आ रहे होते हैं। थकान भी होती है। इसलिए अगर यह आने वाले जमाअत के ठहरने के स्थानों में ठहर रहे हैं तो वहां की प्रशासन को आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इस बात को याद रखना चाहिए कि अपने भाई को मुस्कुरा कर मिलो यह सदका है। (सुनन अत्तर्मिज़ी अबवाब अल्बिर्रे वस्सिला हदीस 1970) फिर एक अवसर पर यह भी फरमाया कि मामूली सी नेकी को भी तुच्छ न समझो। अपने भाई से मुस्कराते हुए व्यवहार करना भी भलाई है। (सहीह मुस्लिम किताबुल् बिर्रे हदीस 2626) देखें इस्लाम की शिक्षा कैसी सुंदर शिक्षा है। मेहमान के सम्मान का तो वैसे भी आदेश है। एक ऐसा आदेश है जिसका सवाब है। फिर यह मेहमानी करना कि आने वाले से सिर्फ मुस्कुरा कर बात कर लेना यह सदका दिए जाने जैसे कार्य के बराबर है और इस को सदके दिए जाने जैसे कार्य के बराबर का सवाब वाला भी बताया। इस सवाब का दुगना इनाम है। एक मेहमान नवाज़ी का इनाम एक नैतिकता से व्यवहार करने को सदके का सवाब। प्यार से बात करना ,अच्छे व्यवहार से बात करना नेकी गिनी जाती है और नेकी का बदला अल्लाह तआला ने कितना देना है यह अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

फिर रास्ता दिखाना भी आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया एक सदका है।(सहीह बुख़ारी किताबुल जिहाद हदीस 2891) जो विभाग इस काम के लिए निर्धारित है उसे भी इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि सफर करके आए यात्री से एक तो नैतिकता से मिलें फिर सहायकों द्वारा उन्हें उनके निवास स्थानों पर पहुंचाएं, खासकर जब औरतें और बच्चे होते हैं अर्थात् केवल औरतें हो और पुरुष उनके साथ न हों बच्चे उनके साथ न हो तो उन्हें ठहरने के स्थानों तक पहुंचाना स्वागत विभाग या जो भी संबंधित विभाग है इस काम का है और यह बड़ी ज़रूरी बात है। कई बार सामान आदि लेने के लिए ज़रूरत पड़ जाती है उसकी मदद करनी चाहिए। इसी तरह मुस्कुरा कर और नैतिकता से बात करना केवल स्वागत का नहीं बल्कि हर क्षेत्र में काम करने वाले कार्यकर्ता के लिए आवश्यक है।

आजकल हालात की वजह से एमज़ (AIMS) कार्ड रखना चाहिए। कई बाहर से आने वाले परिचय पत्र और जानकारी लेकर आते हैं और फिर उनके जलसे के कार्ड यहाँ बना दिए जाते हैं। कई बार ऐसे भी मामले आ रहे हैं कि परिचय

पत्र नहीं होता तो ऐसी मामले में बेशक तसल्ली करना तो बहुत ज़रूरी है जब तक तसल्ली न हो कार्ड नहीं बनाया जा सकता और परिचय की कार्रवाई होनी चाहिए लेकिन इस अवधि में आने वाले से अच्छे स्वभाव से व्यवहार करना, उस के इंतज़ार के लिए बैठने की उचित व्यवस्था होना, यह भी बड़ा आवश्यक है। कई बार छोटे बच्चे साथ होते हैं जो लंबे इंतज़ार के कारण बेचैन होते हैं।

प्रथम तो हर आने वाले मेहमानों को भी यह ध्यान रखना चाहिए कि जब वह जलसा में आएँ तो जमाअत के परिचय पत्र के साथ आना चाहिए या अपने एमज़ कार्ड लेकर आना चाहिए और अगर किसी कारण से यह रह गया हो तो संबंधित विभाग कार्रवाई के दौरान उन्हें सुविधा उपलब्ध करे जैसा कि मैंने कहा कि वह आराम से बैठ सकें।

फिर खाने की मेहमान नवाज़ी का संबंध है इस में तो जमाअत के आवासों में ठहरे हुए मेहमान हैं उन्हें दो बार या तीन बार जो खाना खाते हैं इस की मेहमान नवाज़ी ज़रूरी है लेकिन जलसा के तीन दिनों में हर सम्मिलित होने वाला मेहमान जो आमतौर पर जलसा सुनने के लिए आता है कम से कम दोपहर का खाना जमाअत के प्रबंध के अधीन खाता है कि इस में खिलाने वाले अधिकारी और सहयोगी इस बात का ध्यान रखें कि मेहमान से नैतिकता से पेश आना है। नैतिकता से पेश आना मेहमान का अधिकार है और मेज़बान का कर्तव्य है। कई लोग खाने के मामले में कर्मचारियों को परेशानी में डालते हैं विभिन्न प्रकार के सवाल करते हैं या मांग कर रहे होते हैं। यह चाहिए, वे चाहिए। लेकिन कार्यकर्ताओं को फिर भी सहन करना चाहिए। खाना एक ऐसी चीज है जिस में खिलाने वाले का अभद्र व्यवहार या मामूली सी भी अनावश्यक टिप्पणी या कोई बात कहना मेहमान की भावनाओं को चोट लगाती है। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा ने तो मेहमानों की मेहमान नवाज़ी करते समय ऐसे नमूने दिखाए थे जो हमेशा स्वर्ण अक्षरों में लिखे जाएंगे। जब एक सहाबी मेहमान को अपने साथ ले जाने और खिलाने का आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आदेश फरमाया वह आप के आदेश पर मेहमान को अपने घर तो ले गिया लेकिन पत्नी ने कहा कि घर में तो थोड़ा खाना है जो बच्चों के लिए है। दोनों पति पत्नी ने परामर्श किया कि बच्चों को किसी तरह सुला दो और फिर जब मेहमान के सामने खाना पेश हो तो दिया या रोशनी जो है वह भी बुझा दो और ख़ुद घर वाले इस तरह अंधेरे में व्यक्त करें जैसे वह भी खाना खा रहे हैं ताकि मेहमान आराम से खाना खाते रहे और उसे यह एहसास न हो कि घर वाले खाना नहीं खा रहे। बहरहाल इस तरकीब से मेहमान को पता न चला और घर वालों ने इस तरह मेहमान नवाज़ी की और मेहमान ने बड़े आराम से खाना खाया। सुबह जब वह अंसारी सहाबी आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हुए तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि तुम्हारे रात वाले कार्य और तरकीब से तो अल्लाह तआला भी हंस दिया।

(सहीह अल्बुख़ारी किताबुल मनाकिब हदीस 3798)

अत: यह कुर्बानी विशेष रूप से इस परिवार ने इसलिए दी कि मेहमान आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का मेहमान था। सामान्य रूप से तो सहाबा मेहमानों की ख़ातिरदारी करते थे लेकिन उसके साथ यह विशेष व्यवहार इसलिए भी हुआ।

आज हमारा प्रत्येक कार्यकर्ता यह कुरबानी इसलिए देता है और उसे इस भावना के अधीन यह कुर्बानी देनी चाहिए कि वह आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे ग़ुलाम के मेहमानों की सेवा कर रहा है यद्यपि कि यह भूख की कुरबानी और अपना खाना मेहमान को खिलाने की कुरबानी यहां तक कि बच्चों को भूखा सुला देने की कुरबानी बहुत बड़ी कुर्बानी है और आजकल तो यह नहीं देनी पड़ती। अल्लाह तआला की कृपा से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के साथ अल्लाह तआला के वादे के अनुसार दुनिया में हर जगह जहां जमाअत मज़बूत नींव पर स्थापित हैं लंगर चल रहे हैं और विशेष रूप से जलसा के दिनों में तो इसकी विशेष व्यवस्था है। हम ने तो सिर्फ़ इतनी सेवा करनी है कि लंगर से खाना लेकर मेहमान के सामने प्रस्तुत कर देना है और मेहमान से नैतिकता से पेश आना है और इस बात पर अल्लाह तआला ख़ुश हो जाता है कि वह जलसा में आने वाले धर्म के लिए सफर करके आने वाले मेहमानों की सेवा की और अगर सही रूप में मेहमान नवाज़ी न हो तो अल्लाह तआला से नाराज़गी भी व्यक्त होती है।

एक अवसर पर कुछ मेहमानों से असाधारण व्यवहार किया गया और कुछ को नज़र अंदाज कर दिया गया। यह सब काम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़मान् में जो भी प्रावधान था, भोज के कार्यकर्ता थे उन्होंने किया तो अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को रात को ख़बर दी कि रात दिखावा किया गया है। बनावट की गई है और सही तरह मेहमानों की सेवा नहीं की गई। कुछ दरिद्र खाने से वंचित रहे हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस बात पर बड़े नाराज़ हुए और फिर प्रबंध अपने हाथ में ले लिया, बल्कि यह भी रिवायत है कि इन कार्यकर्ताओं को छह महीने के लिए क़ादियान से ही निकाल दिया। (तज़किरा पृष्ठ 689 संस्करण चतुर्थ 2004 ई) अत: जब सेवा के लिए हम ने अपने आप को प्रस्तुत किया है तो बिना किसी अनुकूलित के प्रत्येक की सेवा करनी चाहिए। हर जलसा में आने वाला मेहमान जलसा का मेहमान है। प्रत्येक से अच्छा व्यवहार करना प्रत्येक से अच्छे स्वभाव से पेश आना ज़रूरी है। यह नहीं कि अमुक अमीर है या अमुक विशेष मेहमान है उसे अमुक जगह खिलाना है और अमुक को नहीं। जहां भी खाने का प्रबन्ध है वह खिलाएं लेकिन सामान्य रूप में अहमदियों को तो एक जगह ही खाना खाना चाहिए। कुछ अलग स्थान विशेष मेहमानों के लिए बने हैं और वे जमाअत के बाहर के या ग़ैर मुस्लिमों के लिए बनाए गए हैं वहां केवल उन्हीं को ले जाना चाहिए। इस बात का भी प्रशासन को ध्यान रखना चाहिए। मेरी जानकारी में है कि कुछ कार्यकर्ता अपने परिचितों को इस जगह पर खिलाने के लिए ले जाते हैं जहां जो केवल मेहमानों की जगह है। इसलिए आमतौर पर चाहे वह अहमदी अधिकारी है या कोई है उसे आम मेहमानों की जगह जाकर ही खाना खाना चाहिए।

फिर साथ ही यह दुआ भी करते रहना चाहिए कि अल्लाह तआला हमारी इस छोटी सी सेवा को जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मेहमानों की कर रहे हैं इसे स्वीकार भी करे और हमारे काम सभी प्रकार के दिखावा से खाली हों और विशेष रूप से अल्लाह तआला के लिए हों।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के समय मेहमानों की कुछ दिनों में इतनी अधिकता हो जाती थी कि रहने के लिए इंतज़ाम भी मुश्किल लगता था क्योंकि क़ादियान छोटी सी जगह थी लेकिन हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अल्लाह तआला के इस आदेश के अनुसार कि परेशान नहीं होना और थकना नहीं बेतकल्लुफी के परिवेश में जो भी सुविधा मिलती मेहमानों के लिए हो सकता था किया करते थे। कई बार ऐसे अवसर भी आए कि सर्दियों में मेहमानों की अधिकता के कारण से अपने और अपने बच्चों के गर्म बिस्तर आप ने मेहमानों को प्रदान कर दिए।

(उद्धरित सीरतुल महदी भाग 2 हिस्सा चतुर्थ पृष्ठ 91-92 रिवायत नम्बर 1118)

एक बार इतने मेहमान आ गए कि हज़रत अम्मा जान हज़रत उम्मुल मोमिनीन बड़ी परेशान थीं कि मेहमान ठहरेंगे कहाँ और कैसे उन का प्रबंध होगा? इस अवसर पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम उन्हें एक कहानी सुनाई कि जंगल में एक मुसाफिर को शाम हो गई। रात अंधेरी थी। निकट कोई बस्ती नहीं थी कोई जगह नहीं थी। कोई शहर नहीं था। जहां जाना के वह आराम कर सके तो वह बेचारा एक पेड़ के नीचे रात बिताने के लिए लेट गया। उस पेड़ के ऊपर पक्षियों का एक घोंसला था जो नर और मादा थे। इन पक्षियों ने यह फैसला किया कि यह व्यक्ति जो आज हमारे पेड़ के नीचे लेटा है यह आज हमारा मेहमान है। इसलिए हमारा कर्त्तव्य है कि इस की मेहमान नवाज़ी करें। अब मेहमान नवाज़ी कैसे की, उन्होंने फैसला किया, पहली बात तो यह सोची कि रात ठण्डी है हमारे मेहमान को ठंड लगेगी तो उसे आग सेंकने के लिए कोई चीज़ प्रदान की जाए। फिर यह सोचा कि हमारे पास और तो कुछ है नहीं अपना घोंसला तोड़ कर नीचे फेंक देते हैं जिस के घास फूस और लकड़ियों से मेहमान जो है आग जला कर कुछ आग सेंक लेगा तो उन्होंने अपना घोंसला फेंका और उस व्यक्ति ने उसे जलाया और आग सेंकने लगा। फिर परिंदों ने यह फैसला किया कि और तो हमारे पास मेहमान को खिलाने के लिए कुछ नहीं हम ख़ुद ही आग में गिर जाते हैं और जब आग में भुन जाएंगे तो यह मेहमान हमें खा लेगा। तो उन्होंने ऐसा ही किया और मेहमान के भोजन का प्रबंध कर दिया।

(उद्धरित सीरत हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हज़रत शेख़ याक़ूब अली इर्फानी साहिब पृष्ठ 130-131)

तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की यह कहानी सुनाने का उद्देश्य था कि मेहमान आने पर परेशान होने के स्थान पर जिस हद तक इंसान के बस में हो क़ुरबानी देकर भी मेहमान नवाज़ी करनी चाहिए।

फिर यह हम सभी के लिए शिक्षा है, खासकर वे जो अपने आप को इस काम के लिए प्रस्तुत करते हैं कि अपने ज़िम्मे डयूटियों के हक़ अदा करने की पूरी कोशिश

करें।

डयूटियों में बहुत सारी डयूटियाँ हैं। विभिन्न विभाग हैं। जैसे कार पार्किंग का भी एक विभाग है। यह भी बहुत महत्त्वपूर्ण क्षेत्र है। कई बार मेहमान यहाँ ग़लत व्यवहार भी दिखा रहे हैं और कार्यकर्ता के निर्देश के अनुसार पार्किंग न करने पर जोर देते हैं। अपनी इच्छा से पार्किंग करना चाहते हैं ऐसे में कार्यकर्ता को यथा सम्भव यह कोशिश करनी चाहिए कि उसे सहजता से समझाए और फिर अपने ऊपर के अधिकारी जो हैं उन्हें सूचना दे। पिछले साल भी ऐसी शिकायतें आई थीं कि कार पर आने वाली कुछ महिलाए या कुछ महिलाओं ने कहा कि हम कार आगे लेकर जाएंगे वहां ड्यूटी वाले से सख़्त बात हो गई। बेशक अपने कर्तव्यों का अदा करना हर कार्यकर्ता का कर्तव्य है और आजकल के हालात में तो बहुत अधिक ध्यान भी करने की ज़रूरत है, विशेष रूप से पार्किंग में भी लेकिन इसके साथ ही जैसा कि मैंने कहा नैतिकता का प्रदर्शन भी होना चाहिए। यदि किसी की कोई उचित मांग है कोई बीमार है या कोई और कारण है तो उसे आराम से समझाएं और बताएं कि मैं अपने उच्च अधिकारी को कहता हूँ तो वह आप के लिए कोई सुविधा प्रदान कर देता है लेकिन इतने समय में आराम से यह आवेदन भी करें कि आप एक तरफ खड़े हो जाएं और मेहमानों को इस से सहयोग भी करना चाहिए ताकि बाकी यातायात जो है प्रभावित न हो क्योंकि कई बार इस बहस में और झगड़ों में कारों की लंबी लाइनें लग जाती हैं और अन्य प्रभावित होते हैं और फिर जलसा की कार्यवाही शुरू होने के बाद लोग जब आते हैं जलसा स्थल में तो बैठे हुए लोग फिर डिस्टर्ब होते हैं।

हर समस्या जो पिछले जलसों में सामने आई हो प्रशासन को चाहिए कि इस का समाधान और संभावित पहलुओं की समीक्षा करें और हर विभाग जिसके सामने यह समस्या हो उसे भी समीक्षा करनी चाहिए और फिर अफसर जलसा सालना को बताना चाहिए कि कैसे समाधान हो सकती है ताकि इस बार कम से कम समस्याएँ पैदा हों। छोटे-मोटी बातें तो पैदा होती हैं लेकिन कोशिश यह करनी चाहिए कम से कम समस्याएँ पैदा हों।

स्कैनिंग और जाँच के लिए भी सभी सावधानियों के साथ ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए कि लंबा समय लोगों को प्रतीक्षा भी न करनी पड़े और किसी तरह उन्हें तकलीफ न हो। प्रवेश गेट और जलसा स्थल के एंट्रेंस जो है उसमें बार-बार यह घोषणा भी होती रहें कि आने वाले अपने कार्ड भी सामने रखें और लाइनों को भी कायम रखें ताकि जल्दी और तेज़ी से लोग गुज़र सकें।

इस तरह बाथरूम की सफाई के कार्यकर्ता हैं, दोनों स्थानों में पुरुषों में भी महिलाओं में भी कई बार परेशान होते हैं कि लोग गंद बड़ा डाल जाते हैं। अगर सहायक बार बार घोषणा कर के ध्यान दिलाते रहें कि सफाई पर भी ध्यान दें कि पवित्रता और सफाई भी ईमान का हिस्सा है। तो इसलिए अपने परिवेश को भी साफ रखें और बाथरूम भी साफ कर दिया करें अगर मेहमान हो तो कोई हर्ज नहीं। आमतौर लोग सहयोग करते हैं यही पिछले साल भी रिपोर्ट आती रही थीं लेकिन अगर कोई सहयोग न भी करे तो कार्यकर्ता ख़ुद सफाई करते हैं यही उनकी ड्यूटी होती है और इस बात का ध्यान रखें कि उनकी तरफ से किसी प्रकार भी बुरे व्यवहार का प्रदर्शन नहीं होना चाहिए और कभी भी उन्होंने धैर्य को हाथ से नहीं छोड़ना।

इसी तरह जलसा गाह की सामान्य सफाई कर्मचारियों का काम है कि साथ के साथ अगर कोई गंद जलसा क्षेत्र में देखें, महिलाओं की तरफ भी, पुरुषों के तरफ भी बच्चे कई बार, गिलास रैपर आदि फेंक देते हैं, डिब्बे फेंक देते हैं बल्कि कई बार बड़े भी ऐसे होते हैं बड़े भी सावधानी नहीं करते हैं तो इसकी सफाई साथ साथ करते रहें तो वायंड अप करने वाले कार्यकर्ताओं को आसानी हो जाती है क्योंकि वहाँ से मारकियाँ उठाना और बाकी जो बड़ा सामान है वह उठाना ही काम नहीं होता बल्कि वहां से हर तरह के गंद को उठाना भी हर कागज़ को उठाना भी ज़रूरी होता है तब परिषद स्वीकृति देती है। बहरहाल इस ओर भी बार बार मेहमानों को आराम से ध्यान दिलाते रहना चाहिए कि टीन के डिब्बे आदि बजाय इधर उधर डालने के डसट बिन में फेंकें ।

जलसा के प्रशिक्षण विभाग को इस मामले में भी सक्रिय होना चाहिए कि जलसा में शामिल होने के लिए जो लोग आते हैं उन्हें जलसा के महत्त्व की ओर ध्यान दिलाते रहें। बेशक कार्यकर्ता जब अपने आप को सेवा के लिए प्रस्तुत करता है तो उसका कर्तव्य है कि वह निस्स्वार्थ होकर काम करे और अल्लाह तआला की कृपा से सामान्य कार्यकर्ता जैसा कि मैंने पहले भी कहा इस भावना से काम करते हैं, लेकिन कुछ ग़लत रवैया भी दिखा जाते हैं उन्हें हमेशा आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की यह नसीहत याद रखनी चाहिए कि मैंने पहले भी कहा कि हर हालत में नैतिकता का प्रदर्शन किया जाना चाहिए।

इसी तरह हर कार्यकर्ता को आमतौर पर हर समय सावधान भी रहना चाहिए सुरक्षा केवल स्कोरटी वालों का काम नहीं है बल्कि हर विभाग का हर कार्यकर्ता अपने स्वयं के परिवेश में नज़र रखने वाला होना चाहिए।

कार्यकर्ताओं को यह भी याद रखना चाहिए कि जलसा समाप्ति के बाद केवल वायंड अप कार्यकर्ता ही वहां न मौजूद हों बल्कि प्रत्येक कार्यकर्ता को तब तक जलसा गाह में रहना चाहिए जिस की भी वहां ड्यूटी है जब तक कि कोई मेहमान मौजूद है या जब तक उनके संबंधित अधिकारी उन्हें विदा नहीं दे देते कि अब आप खाली हैं चले जाएं।

सबसे बढ़कर कार्यकर्ताओं को भी और सामान्य रूप से सभी जमाअत के लोगों को भी यह दुआ करनी चाहिए कि अल्लाह तआला प्रत्येक को उत्तम रूप में अपने कर्तव्यों को अदा करने की तौफ़ीक़ प्रदान करे। सभी कार्यकर्ता जो इस समय जलसा गाह में काम कर रहे हैं उनके हर तरह से सुरक्षित रखे। कई बार बड़े भारी भारी काम करने पड़ते हैं और कई बार चोट आदि लगने का भी खतरा होता है। अल्लाह तआला हर दृष्टि से प्रत्येक को सुरक्षित भी रखे।

अल्लाह तआला जलसा को हर दृष्टि से मुबारक और सफल भी फरमाए। किसी भी विरोधी और बुरी प्रकृति वाले की बुराई से अल्लाह तआला जमाअत को हर तरह सुरक्षित रखे और अल्लाह तआला प्रत्येक कार्यकर्ता को तौफ़ीक़ दे कि वे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के जलसे में आए हुए मेहमानों की उत्तम रूप करते रहें और नैतिकता से सेवा करते रहें।

कार्यकर्ताओं ने जो सेवा की उच्च गुणवत्ता हासिल की हुई हैं जिन मानकों पर वे पुहंचे हुए हैं इससे उच्च गुणवत्ता हर बार पेश करने वाले हैं और इस बार भी पहले से अधिक सेवा करने वाले हों। इस में कभी कमी नहीं होनी चाहिए। हमारा हर कदम जो आगे बढ़ने वाला होना चाहिए और जब ऐसी सेवा है तो अल्लाह तआला फिर प्यार की नज़र भी डालता है। अल्लाह तआला सब को इसकी तैफ़ीक़ दे।

☆ ☆ ☆

122 वां
जलसा सालाना क़ादियान
(जलसा सालाना के आरम्भ पर 125 वां साल)
दिनांक 26, 27, 28 दिसम्बर 2016 ई. को आयोजित होगा

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 122 वें जलसा सालाना क़ादियान के लिए दिनांक 26, 27 और 28 दिसम्बर 2016 ई.(सोमवार, मंगलवार व बुधवार) की स्वीकृति दी है। जमाअत के लोग अभी से इस शुभ जलसा सालाना में उपस्थित होने की नीय्यत करके दुआओं के साथ तैयारी आरम्भ कर दें। अल्लाह तआला हम सब को इस ख़ुदाई जलसे से लाभ उठाने की क्षमता प्रदान करे। इस जलसा सालाना की सफलता व बा-बरकत होने के लिए इसी तरह यह जलसा लोगों के लिए मार्ग दर्शन हो इसके लिए विशेष दुआएँ जारी रखें। धन्यवाद

(नाज़िर इस्लाह व इरशाद मरकज़िया, क़ादियान)

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ़्री सेवा) :
1800 3010 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

पृष्ठ 2 का शेष

(सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने फरमाया, "जो हज करने की इच्छा रखे उसे चाहिए कि जल्दी से हज कर ले, इस लिए कि वह बीमार हो सकता है, और उस के हज करने की क्षमता खत्म हो सकती है, और उसे कोई बहुत बड़ी आवश्यकता पड़ सकती है।" (मुस्नद अहमद- सही अल-जामिए- शैख अल-बानी)

हज का महत्त्व और फज़ीलतः

अल्लाह तआला ने हज करने वालों के लिए बहुत पुण्य का वादा किया है, उन में से कुछ महत्त्वपूर्ण लाभ इस प्रकार हैं।

(1) हज करने वालों के गुनाहों और पापों को अल्लाह तआला माफ कर देता है, उस के गुनाहों को समाप्त कर देता है जैसा कि हदीस में वर्णन है कि जब अम्र बिन आस (रज़ि अल्लाहो अन्हो) कहते जब अल्लाह ने मेरे हृदय में इस्लाम का प्रेम डाल दिया तो मैं रसूलुल्लाह के पास आया और कहा कि आप हाथ बढाऐं, मैं इस्लाम स्वीकार करने का वचन देता हूँ तो रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने अपना हाथ मेरी ओर बढ़ाया परन्तु मैं ने अपना हाथ खींच लिया तो रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने कहा, हे अम्र ! तुम्हें क्या हुआ " तो मैं ने उत्तर दिया कि हे अल्लाह के रसूल, आप वादा दीजिए कि अल्लाह तआला मेरे पिछले गुनाहों को क्षमा कर दे, तो रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने कहा,हे अम्र, क्या तुम्हें पता नहीं कि इस्लाम अपने से पूर्व गुनाहों को मिटा देता है, और हिजरत अपने से पूर्व गुनाहों को खत्म कर देती है और हज अपने से पहले गुनाहों को मिटा देता है। (सही मुस्लिम)

(2) हज को जाने वाला अल्लाह की हिफाज़त में रहता है, जैसा कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने फरमाया,

अबू हुरैरा (रज़ि अल्लाह अन्हो) से वर्णन है कि नबी (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने फरमाया, " तीन व्यक्ति अल्लाह तआला की सुरक्षा में रहते हैं, एक व्यक्ति जो अल्लाह के घरों में से किसी घर की ओर जाता है, और एक व्यक्ति जो अल्लाह के रास्ते में जिहाद के लिए निकलता है, और एक व्यक्ति जो हज करने जाता है।" (अबू नुऐम और सही अल-जामिअ, हदीस संख्या: 3051)

(3) हज पर जाने वाले अल्लाह के मेहमान होते हैं, अल्लाह उनकी दुआऐं स्वीकार करते हैं। जैसा कि अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि अल्लाहो अन्हुमा) रिवायत करते हैं,

नबी (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने फरमाया, "अल्लाह तआला के रास्ते में जिहाद करने वाला और हज करने वाला और उमरा करने वाला अल्लाह का मेहमान होता है, अल्लाह तआला ने उन्हें बुलाया तो वह लोग आए, और अल्लाह से दुआ करते हैं तो अल्लाह उनकी दुआ स्वीकार करता है।"

(सही सुनन इब्नि माजा, हदीस संख्या: 2339)

(4) अल्लाह पर ईमान और उसके रसूल पर ईमान लाने के बाद और अल्लाह के रास्ते में जिहाद के बाद सब से अच्छा कर्म हज करना है जैसा कि हदीस शरीफ में आया है।

अबू हुरैरा (रज़ी अल्लाह अन्हु) से वर्णन है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) से प्रश्न किया गया कि सब से उत्तम कर्म क्या है ? तो आप (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने फरमाया, अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाना, फिर प्रश्न किया गया कि उस के बाद कौन सा कर्म सब से उत्तम है ? तो आप (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने फरमाया, अल्लाह के रास्ते में जिहाद, फिर प्रश्न किया गया कि उस के बाद कौन सा कर्म सब से उत्तम है ?, तो आप (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने फरमाया, हज मब्रूर " (सही बुखारी,1/14 और सही मुस्लिम)

(5) यदि कोई हज करने वाले व्यक्ति का हज के यात्रा के बीच देहांत हो गया तो उस के लिए क़यामत तक हज करने वाले का सवाब और पुण्य लिख दिया जाता है।

अबू हुरैरा (रज़ि अल्लाह अन्हो) से वर्णन है कि नबी (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने फरमाया "जो व्यक्ति हज के लिए निकला और रास्ते में उसका देहांत हो गया तो क़यामत तक हज करने वाले का सवाब लिख दिया जाता है, और जो व्यक्ति उमरा के लिए निकला और रास्ते में उसका देहांत हो गया तो क़यामत तक उमरा करने वाले का सवाब लिख दिया जाता है।

(सही तरग़ीब व तरहीब शैख अलबानी)

(6) हज मब्रूर का बदला जन्नत है: हज मबरूर उस हज को कहा जाता है जिस में हाजी अल्लाह की नाफरमानी नहीं की, किसी दुसरे हाजी को तनिक तकलीफ नहीं दी, रसूल (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) की सुन्नत के अनुसार हज किया, तब वह अल्लाह के पास स्वीकार होगा और जिस का हज अल्लाह के पास स्वीकार होगा, वह जन्नत में दाखिल होगा, जैसा कि रसूल (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने फरमाया।

अबू हुरैरा (रज़ि अल्लाह अन्हो) से वर्णन है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने फरमाया " अल्लाह के पास स्वीकारित हज का बदला केवल जन्नत है। (सही बुखारी और सही मुस्लिम)

अहमदिया मुस्लिम जमाअत के संस्थापक हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी जमाअत को इस्लाम के फरायज़ तथा हज की अदायगी की ओर ध्यान दिलाते हुए फ़र्माया :-

"और हम अपनी जमाअत को नसीहत करते हैं कि वह सच्चे दिल से इस कलिमा तय्यबा पर ईमान रखें कि ला इलाहा इल्लल्लाहो मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह और इसी पर मरें और सभी नबी और सभी वह पुस्तकें जिन की सच्चाई क़ुर्आन करीम से सिद्ध है उन सभी पर ईमान लाएं और रोज़ा (व्रत) नमाज़, ज़कात तथा हज और ख़ुदा तआला और उस के रसूल के क़ायम किए हुए सभी कर्तव्यों को कर्तव्य समझ कर और सभी निषेध की हुई बातों से बच कर ठीक ठीक इस्लाम पर क़ायम हों। हम आकाश और धरती को इस बात पर गवाह करते हैं कि यही हमारा धर्म है।"

(अय्यामुस्सुलह पृ. 96-97)

(शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

☆ ☆ ☆

माली के रूप में सेवा के इच्छुक ध्यान दें ।

सदर अंजुमन अहमदिया कादियान के विभाग तज़ययुन के माली का पद पर नौकरी के लिए आवेदन चाहिए। जो दोस्त सदर अंजुमन अहमदिया में बतौर वित्तीय (स्थिति चतुर्थ) के ग्रेड में सेवा की इच्छा रखते हों वह निम्नलिखित शर्तों के अनुसार निवेदन दे सकते हैं।

(1) उम्मीदवार के लिए शिक्षा की कोई शर्त नहीं है।

(2) उम्मीदवार की आयु 25 वर्ष से कम होनी चाहिए। बर्थ सर्टिफिकेट देना आवश्यक होगा।(3) वही उम्मीदवार सेवा के लिए उपयुक्त होगा, जो केंद्रीय समिति भर्ती कार्यकर्ताओं के इन्ट्रवियू में सफल होंगे।

(4) वही उम्मीदवार सेवा के लिए लिया जाएगा जो नूर अस्पताल कादियान के मेडिकल बोर्ड की रिपोर्ट के अनुसार स्वस्थ और तंदुरुस्त होंगे।

(5) उम्मीदवार का कादियान आने जाने का सफर खर्च अपना होगा।

(6) यदि किसी उम्मीदवार का चयन होता है तभी उसे कादियान में अपने आवास की व्यवस्था स्वयं करनी होगी।

(7) प्रस्तावित आवेदन फार्म नज़ारत दीवान सदर अंजुमन अहमदिया से लिए जा सकते हैं। इस घोषणा के दो महीने के अंदर जो आवेदन आएंगे उस पर विचार होगा।

(नाज़िर दीवान सदर अंजुमन अहमदिया कादियान)

अधिक जानकारी के लिए संपर्क कर सकते हैं:

कार्यालय: 01872-501130 मोबाइल: 09815433760

e.mail: nazaratdiwanqdn@gmail.com

☆ ☆ ☆

ज़ैली तंज़ीमों के सालाना इज्तिमा 2016 ई की तारीखों की घोषणा

सय्यदना हज़रत ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ ने कादियान दारुल अमान में निम्न तारीखों में ज़ैली तंज़ीमों के सालाना इज्तिमा के आयोजन की मंजूरी प्रदान की है। पुरूष तथा स्त्रीयां इस आध्यात्मिक इज्तिमा में भाग लेने के लिए अभी से तैयारी शुरू कर दें।

इज्तिमा लजना इमा उल्लाह भारत और नासरातुल अहमदिया दिनांक 15 से 17 अक्तूबर 2016 (शनिवार, रविवार, सोमवार)

इज्तिमा मजलिस ख़ुद्दामुल अहमदिया एवं अत्फालुल अहमदिया दिनांक 15 से 17 अक्तूबर 2016 (शनिवार, रविवार, सोमवार)

इज्तिमा मजलिस अंसारुल्लाह भारत दिनांक 18 से 20 अक्तूबर 2016 (मंगलवार, बुधवार, गुरुवार)

☆ ☆ ☆

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN XXX
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
PUNHIN 01885 Vol. 1 Thursday 8 September 2016 Issue No. 27

MANAGER : NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com
ANNUAL SUBSCRIPTION : Rs. 300/-

अल्लाह तआला की मदद

हज़रत हकीम मौलवी नूरुद्दीन साहिब फ़र्माया करते थे कि आप के एक गुरू मौलवी रहमतुल्लाह साहिब थे जो बाद में मदीना चले गए। वह बड़े नेक तथा बज़ुर्ग थे मगर ईसाई धर्म की उन्हें जानकारी नहीं थी। एक दिन ईसाइयों के साथ उन की बहस होने की बात पक्की हुई उन के मुकाबले में जो पादरी था वह बहुत होशियार था मगर यह केवल क़ुर्आन करीम और हदीस जानते थे। क्योंकि काफ़ी समझदार थे, इसलिए कहते थे कि अगर मैं ने क़ुर्आन और हदीस को पेश किया तो पादरी कह देगा कि मैं इन को नहीं मानता दलील एसी होनी चाहिए जिसे वह माने और वह मुझे नहीं आती आख़िर कहने लगे आओ ख़ुदा से दुआ करते हैं। उन्होंने दुआ की। रात को ग्यारह बजे उन का दरवाज़ा किसी ने खट खटाया। उन्होंने दरवाज़ा खोला तो एक आदमी जुब्बा पहने हुए अन्दर आया और कहने लगा सुबह आप की पादरी से बहस है। मैं भी पादरी हूँ मगर मैं समझता हूँ तौहीद (एकेश्वरवाद) के मामले में आप सच्चे हैं इस लिए मैं चाहता हूँ कि आप कुछ हवाले नोट कर लें क्योंकि हो सकता है उन हवालों का आप को ज्ञान न हो। इस प्रकार उस ने सभी हवाले लिखवा दिये और सुबह जब बहस हुई तो वह पादरी यह देख कर हैरान रह गया कि इन्हें तो किसी हवाले का ज्ञान ही नहीं था अब यह क्या हुआ कि कहीं यूनानी किताबों के हवाले दे रहे हैं तो कहीं इब्रानी किताबों के हवाले पढ़ रहे हैं। कहीं अंग्रेज़ी किताबों के अंश पढ़ रहे हैं तो कहीं बाइबिल से तौहीद (एक ख़ुदा) की शिक्षा सुना रहे हैं। आख़िर कार उन्होंने ज़बरदस्त बहस की और पादरी को हार माननी पड़ी इसी प्रकार वह रोज़ाना रात को आता और हवाले लिखा कर चला जाता और सुबह आप खूब धड़ल्ले से उसे पेश करते।

जब कोई इन्सान नेक काम करने के लिए खड़ा हो जाता है तो अल्लाह तआला अपने आप लोगों के दिलों में उसके प्रति सहानुभूति डाल देता है और वह उसकी मदद करने लगते हैं। (मिर्क़ातुल यकीन से उद्धरित)

☆ ☆ ☆

ज्ञान का उठाया जाना

बुख़ारी शरीफ में किताबुल इलम में अध्याय ज्ञान का उठाया जाना और अज्ञानता का फैल जाना शीर्षक में हज़रत अनस से रिवायत मिलती है कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया:

उस समय के चिन्हों मे से यह है कि ज्ञान उठाया जाएगा और अज्ञानता स्थिर हो जाएगी और शराब पी जाएगी और व्यभिचार बहुत अधिक होगा।

(बुख़ारी किताबुल्इलिलम भाग प्रथम पृष्ठ 155)

इसका अर्थ यह लिया जाता है कि ज्ञान के होते हुए फिर अपना सुधार न करना और अपने आप को नष्ट कर देना यह भी एक अर्थ में ज्ञान का उठ जाना है । दोनों मामलों में व्यक्ति न केवल अपनी जान पर अत्याचार करता है बल्कि अपने बुरे नमूने से भी दुनिया में दुष्कर्म के फैलाने का कारण हो जाता है। किसी जाति के विनाश के कारणों में ज्ञान का अभाव भी माना गया है। एक वह समय था कि मुसलमान अंधकार युग में अंधेरे यूरोप और अज्ञान एशिया के शिक्षक व नेता थे और यह समय है कि वे अपनी अज्ञानता के कारण से प्रत्येक स्थान पर अपमानित हैं। शीतलता एवं पवित्रता जो उनके लिए गर्व की वस्तु थी खो बैठे हैं उनका सम्मान जिससे सारा जहां कम्पित था आज उनसे दूर हो चुका है और व्यभिचार जो डर के मारे उनके दहलीज़ों के पास फटकने का साहस न कर सकती थी आज उनके आंगनों में सभी प्रकार की अभद्रता का तमाशा कर रही है और उन्हें एहसास तक नहीं। शराब जिसकी गंध से बेज़ार थे आज उनकी घुट्टी में है

(सही बुखारी अनुवाद हज़रत सैयद ज़ैनु आबदीन वलीयुल्लाह शाह भाग प्रथम पृष्ठ 155,156)

☆ ☆ ☆

बहिश्ती मक़बरा

यह वह क़ब्रिस्तान है जिसकी नींव हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद साहिब कादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला से अपने देहान्त की सूचना पाकर ईश्वर-वाणी के अनुसार 20 दिसम्बर 1905 में रखी। इस सम्बन्ध में हुज़ूर फरमाते हैं कि

1- एक जगह मुझे दिखाई गई तथा उसका नाम बहिश्ती मक़बरा रखा गया और स्पष्ट किया गया कि ये ईश्वरीय समप्रदाय के उन लोगों की क़ब्रें हैं जो बहिश्ती हैं।)

(अलवसीय्यत))

इसको अधिक स्पष्ट करते हुए हुज़ूर फरमाते हैं- "यह अभिप्राय नहीं कि केवल यह भूमि किसी को बहिश्ती बना देगी बल्कि ख़ुदा के कलाम का अभिप्राय यह है कि केवल बहिश्ती ही इसमें दफन किया जाएगा। " (अलवसीय्यत)

2- चूंकि हुज़ूर को इस क़ब्रिस्तान के विषय में बड़ी भारी ख़ुशखबरियां दी गई और ख़ुदा ने यहां तक फर्माया कि उनज़िला फीहा कुल्लु रहमतिन अर्थात हर प्रकार की रहमत (वदान्यता)इस क़ब्रिस्तान में उतारी गई है। अत: इसमें दफन होने के लिए ख़ुदा की इच्छा के अनुसार निम्नलिखित शर्तें निश्चित हैं-

प्रथम- मूसी (दाय पत्र लिखने वाला) बहिश्ती मक़बरा के आवश्यक व्ययों के लिए यथा शक्ति चन्दा दे।

द्वितीय- वह यह वसीय्यत करे (वसीयत फार्म में लिखे) कि उसकी मृत्यु के बाद उसकी पीछे छोड़ी हुई कुल सम्पत्ति का कम से कम दसवां और अधिक से अधिक तीसरा भाग इस्लाम के प्रचार एंव क़ुरआन की शिक्षा के प्रसारण के लिए अर्पित होगा।

तृतीय- वह अल्लाह से डरने वाला और पूर्ण संयमी हो और हर बुराई से बचने वाला और बिदअत (अल्लाह के अतिरिक्त सृष्टि की पूजा और अप्रामाणिक रिवाजों) का काम न करता हो। सच्चा और साफ मुसलमान हो।

प्रत्येक पवित्र आत्मीय जो किसी प्रकार की सम्पत्ति न होने के कारण किसी आर्थिक सेवा की ताकत न रखता हो। यदि यह सिद्ध हो जाए कि वह धर्म के लिए अपना जीवन समर्पित किए हुए था तो वह भी इस कब्रिस्तान में दफन हो सकता है।

हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद साहिब मसीह मौऊद व महदी मौऊद अलैहिस्सलाम का 26 मई सन 1908 ई0 को स्वर्गवास हुआ और 27 मई 1908 को इस क़ब्रिस्तान में दफन हुए। हुज़ूर की क़ब्र चारदीवारी के अन्दर है।

वह लोग जिन्होंने हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद साहिब की उपरोक्त शर्तों को पूरा किया उनके शव को उनके परिजन क़ादियान ला सकें तो उनको भी इस पवित्र क़ब्रिस्तान में दफन कर दिया जाता है संसार के विभिन्न देशों से आए शव जो उपरोक्त शर्तों पर पूरे उतरते थे लेकिन उनको क़ादियान किसी वजह से नहीं लाया जा सकता उनकी स्मृति के लिए शिला लेख इस पवित्र क़ब्रिस्तान में लगा दिए जाते हैं।

☆ ☆ ☆

जोत इक प्रीत की हृदय में जगाने वाले

हज़रत मिर्ज़ा ताहिर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह तआला

ऐ मुझे अपना परिस्तार बनाने वाले
जोत इक प्रीत की हृदय में जगाने वाले।
सरमदी प्रेम की आशाओं को धीरे-धीरे
मद भरे सुर में मधुर गीत सुनाने वाले।
ए मुहब्बत के अमर दीप जलाने वाले
प्यार करने की मुझे रीत सिखाने वाले।
ग़मे फ़ुरक़त में कभी इतना रुलाने वाले
कभी दिलदारी के झूलों में झुलाने वाले।
देख कर दिल को निकलता हुआ हाथों से कभी
रस भरी लोरियां दे-दे के सुलाने वाले।
क्या अदा है मेरे ख़ालिक़, मेरे मालिक, मेरे घर
छुप के चोरों की तरह रात को आने वाले।
राहगीरों के बसेरों में ठिकाना करके
बेठिकानों को बना डाला ठिकाने वाले।

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad